राज्य अध्याय 48

1	**प्रार्थना**

समूह का अगुवा। परमेश्वर के आत्मा के माध्यम से, उसकी उपस्थिति के बारे में जागरूकता प्राप्त करने और उसकी आवाज़ सुनने के लिए उसके मार्गदर्शन हेतु ***प्रार्थना करें।*** अपने समूह और परमेश्वर के राज्य का प्रचार करने से सम्बंधित इस पाठ को प्रभु के हांथों में सौंपे।

2	**साझा करें** (20 मिनट) ***[शांत समय]*** **मीका 5, हाग्गै 2, जकर्याह 14 और मलाकी 3**

अपनी बारी आने पर संक्षेप में ***साझा करें (या*** अपने नोट्स से ***पढ़ें)*** कि अपने दिये गये अनुच्छेद (मीका 5, हाग्गै 2, जकर्याह 14 और मलाकी 3) से शान्त समय में क्या सीखा। अगर कोई अपनी बात को साझा कर रहा है तो उसकी बातों को ध्यान से सुनें तथा लिखें। उसकी बातों पर चर्चा न करें। मुख्य बातों को लिखें।

3	**स्मरण करें** (5 मिनट) ***[रोमियों में प्रमुख वचन]*** **रोमियों में पाए जाने वाले प्रमुख वचनों की समीक्षा करें**

दो-दो करके रोमियों की पत्री से पिछले 5 स्मरण किए गए बाइबल पदों की ***समीक्षा करें।***

(16) रोमियों 12:16. आपस में एक सा मन रखो; अभिमानी न हो, परन्तु दीनों के साथ संगती रखो; अपनी दृष्टि में बुद्धिमान न हो।

(17) रोमियों 12:17. बुराई के बदले किसी के साथ बुराई मत करो; जो बातें सब लोगों के निकट भली है, उनकी चिन्ता किया करो।

(18) रोमियों 13:8. आपस के प्रेम को छोड़ और किसी बात में किसी के कर्जदार न हो; क्योंकि जो दूसरे से प्रेम रखता है, उसी ने व्यवस्था पूरी की है।

(19) रोमियों 13:14. वरन् यीशु मसीह को पहिन लो, और शरीर की अभिलाषाओं को पूरा करने का उपाय न करो।

(20) रोमियों 16:17. हे भाईयों, मैं तुम से विनती करता हूँ, कि जो लोग उस शिक्षा के विपरित जो तुम ने पाई है, फूट डालने और ठोकर खिलाने का कारण होते हैं, उनसे सावधान रहो; और उनसे दूर रहो।

4	**बाइबल अध्ययन** (85 मिनट) ***[रोमियों की पत्री]*** **रोमियों 16:1-27**

परिचय। एक साथ मिलकर **रोमियों 16:1-27** का अध्ययन करने के लिये बाइबल अध्ययन के पाँच चरणों वाली विधि का प्रयोग करें।

रोमियों 16 प्रेरित पौलुस और उसके सहकर्मियों के बारे में बताता है।

चरण 1. पढ़ें। **परमेश्वर का वचन**

आइये एक साथ मिलकर रोमियों 16:1-27 तक पढ़ें।

आइये हम में से हर एक जन एक-एक वचन करके अनुच्छेद खत्म हो जाने तक पढ़ें।

चरण 2. खोजें। **अवलोकन**

ध्यान दें। इस अनुच्छेद में निहित कौन सी सच्चाई आपके लिए महत्वपूर्ण है?

या इस अनुच्छेद के किस सत्य या प्रकाशन ने आपके मन या हृदय को छूआ?

लेखा। प्राप्त एक या दो प्रकाशनों को लिख लें। उस पर विचार विमर्श करें और अपने विचारों को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें।

साझा करें। (जब समूह के सदस्य आपस में दो मिनट विचार या लिख लें, तो उसे लोगों के साथ जरूर साझा करें) आइये हम बारी बारी एक दूसरे को बताएं कि हमने क्या सीखा है।

(याद रखें: हर एक छोटे समूह में, समूह के सभी सदस्य अलग बातों को साझा करेंगे)

16:1-2

खोज 1. **कलीसिया के कार्यालय में कार्य करने के संबंध में मसीहियों को महिलाओं को कैसे देखना चाहिए।**

फीबे नाम का अर्थ है "उज्ज्वल या प्रकाशमान"। जब एक मसीही एक मसीही कलीसिया से दूसरी में जाता था जहाँ वो उन मसीहियों के लिए अज्ञात था, तब एक सिफारिश का पत्र ज़रूरी होता था। क्योंकि प्रेरित फीबे को किंख्रिया में कलीसिया के "सेविका" के रूप में मानते हैं, वह संभवतः रोम के रोमियों को पौलुस के पत्र का वाहक थी। किंख्रिया कुरिन्थ के बंदरगाहों में से एक था। वहां एक कलीसिया थी और फीबे इस कलीसिया की "सेविका" थी।

(1) फीबे एक डीकन के बजाय सेविका थी।

हालाँकि "सेविका" के लिए ग्रीक शब्द ठीक वैसा ही है जैसा कि ग्रीक शब्द "डीकॉन" (यूनानी: डायकोनोस) (तुलना करें। फिलिप्पियों 1:1; 1 तीमुथियुस 3:8-13), यहाँ कोई आधार या इसे मानने की ज़रूरत नहीं है; फीबे ने एक कार्यालय या कलीसिया में " डीकन" के स्थान पर कार्य किया!

1 पतरस 4:10 में लिखा है कि सभी मसीहियों, पुरुषों और महिलाओं को, स्थानीय कलीसिया में लोगों की उन आत्मिक वरदान के साथ सेवा करने की आवश्यकता होती है जो उन्हें मिले हैं। फीबे ने जो सेवा की वह डीकनों के समान थी: उनकी सेवकाई गरीबों, बीमारों और निर्जन लोगों के लिए दया में से एक थी, और फीबे की सेवकाई यात्रियों के लिए दया और सत्कार की थी। पौलुस उनकी सेवा को कई को "सहायता देने" के रूप में कहता है (यूनानी: प्रोस्टैटिस) जिनमे से एक पौलुस भी था। इस शब्द का अर्थ है "संरक्षक, संरक्षिका, सहायक या मददगार"। उसने पूर्व और पश्चिम के बीच यात्रियों की सहायता की जो कुरिन्थ के बंदरगाह में रुकते थे। वह एक सुशील महिला भी हो सकती थी, जिसमें सतर्क दिमाग और अजनबियों के प्रति दया और हृदय से मदद की भावना थी। उसकी तुलना उन महिलाओं से की जानी चाहिए, जिसका उल्लेख मरकुस 15:41, 1 तीमुथियुस 5:9-10 और प्रेरितों 16:15 में किया गया है, जिन्होंने इसी तरह की सेवाएं दी थीं।

लेकिन यह तथ्य कि फीबे ने एक विशिष्ट सेवा का प्रदर्शन किया है, इसका मतलब यह नहीं है कि उसने कलीसिया के एक कार्यालय में डीकन के पद पर कब्जा कर लिया है। बाइबल में कोई ऐसी उल्लेख नहीं है कि महिलाओं ने किसी कार्यालय में

"वरिष्ठ" या "डीकन" के रूप में कब्जा किया। बाइबल में वरिष्ठ सभी "पुरुष" थे (निर्गमन 18:21; व्यवस्थाविवरण 1:13; प्रेरितों 20:17, 28; 1 तीमुथियुस 2:11-12; 3:1-2,4; तीतुस 1:6-9)। लेकिन कुछ महिलाओं के पास सेवकाई का उपहार था (रोमियों 12:7) और बाइबल में सभी महिलाओं को अपने उपहार के साथ सेवा करने की आवश्यकता है!

(2) दासों और डीकन में अंतर।

दास। नए नियम की मूल भाषा में इस शब्द का शाब्दिक अर्थ है "सेवक" (यूनानी; डायकोनोस)। बाइबल सिखाती है कि मसीह के शरीर में "कई सदस्य" हैं, हर का एक कार्य (यूनानी: प्रैक्सिस), हर एक "एक अलग आत्मिक उपहार के साथ" (यूनानी: करिश्माता डायफोरा) (रोमियों 12:3-8) और हर कोई विभिन्न सेवा / सेवकाई के साथ है (यूनानी: डायकोनिया) (1कुरिन्थियों 12:5)। परमेश्वर मसीहियों को जो अलग-अलग आत्मिक उपहार देते हैं, वे सेवा करने के लिए हैं (1पतरस 4:10-11)। और कुछ आत्मिक उपहार कलीसिया के निर्माण के लिए मसीहियों को तैयार करने के लिए हैं (इफिसियों 4:11-12)।

रोमियों 12:7 एक विशेष आत्मिक उपहार को "सेवकाई" (यूनानी: डायकोनिया) का उपहार को बताता है और यह "सहायक कर्मों" के आत्मिक उपहार से संबंधित है (यूनानी: एंटीलैम्पिसिस) (1कुरिन्थियों 12:28)। ये दोनों आत्मिक उपहार एक कलीसिया कार्यालय का हवाला नहीं देते हैं, लेकिन किसी क्षेत्र में सेवा करने की इच्छा और क्षमता के लिए है।

डीकन। सभी मसीही "दास" हैं (उनका एक विशेष कार्य है), लेकिन केवल कुछ मसीही "डीकन" होने के लिए नियुक्त किए जा सकते हैं (उनके पास एक विशिष्ट कार्यालय है)।[20] मसीही कलीसिया में, अध्यक्ष का कलीसिया कार्यालय अनिवार्य नहीं है और ज़्यादातर मामलों में आवश्यक भी नहीं है! A.D. 30-32 के बीच, यरूशलेम के स्थानीय कलीसिया में एक विशिष्ट आवश्यकता उत्पन्न हुई। गरीब विधवाओं की मदद करने की मसीही सेवकाई में, यूनानी बोलने वाली विधवाएँ किसी अज्ञात कारण से उपेक्षित थीं। इसलिए यरूशलेम में कलीसिया ने आधिकारिक तौर पर सात लोगों को चुना और इस विशिष्ट समस्या पर अपना ध्यान देने और इस विशिष्ट आवश्यकता को पूरा करने के लिए नियुक्त किया। प्रेरितों 6:1-7 के अनुसार, इन लोगों ने तब तक सेवा की, जब तक कि यह आवश्यकता स्पष्ट रूप से पूरी नहीं हुई।

कुछ समय बाद, उनमें से एक जो फिलिप्पी कहलाता था, को बुलाया गया था जो अब यरूशलेम में एक डीकन के रूप में सेवा नहीं कर रहा था, लेकिन सामरिया में एक प्रचारक के रूप में सेवा कर रहा था। 60-61 ईसवीं में, वहां पूरी बाइबल में केवल दो और स्थानीय कलीसिया के डीकन के कलीसिया कार्यालय का वर्णन है जिनका नाम फिलिप्पी और इफिसुस है (फिलिप्पियों 1:1; 1 तीमुथियुस 3:8-13)।

डीकन को स्पष्ट रूप से प्राचीनों के कलीसिया कार्यालय से अलग किया जाता है। एक डीकन के रूप में चुने जाने के लिए, उन्हें कुछ विशिष्ट बाइबल योग्यताओं को पूरा करना था (प्रेरितों 6:3)। हालाँकि, डीकन के विशिष्ट कार्यों का वर्णन नहीं किया गया है, वे निश्चित रूप से स्थानीय कलीसिया के अगुवे नहीं थे और उन्होंने वरिष्ठों के कार्यों का प्रदर्शन नहीं किया था (प्रेरितों 6:4)। इसलिए "डीकन की समिति" कभी "प्राचीनों की समिति" की जगह नहीं ले सकती है!

(3) क्या मसीही कलीसिया में कोई डीकन था?

---

[20] **एक कार्यालय।** अगुवों की नियुक्ति करके उन्हें एक कार्यालय दिया जाता है। एक कार्यालय एक सार्वजनिक कार्य या सेवकाई है जिसमें मसीह और कलीसिया के वरिष्ठ किसी को बुलाते हैं और उसे नियुक्त करते हैं (शामिल करते हैं, उसे नियुक्त करते हैं)। कलीसिया में कार्यालयों के उदाहरण हैं: वरिष्ठ (याजक), मिशनरी (एक बाहर भेजे गए), उपदेशक, पासबान/ चरवाहा, सुसमाचारवादी, शिक्षक, अध्यक्ष, समूह अगुवे, युवा अगुवे, आदि। वरिष्ठों के इन कार्यालयों के आलावा ये कार्यालय कलीसिया के अगुवे नहीं हैं, लेकिन वरिष्ठों के नेतृत्व में अपने कार्यों में कार्य करना चाहिए! बाइबल में सभी वरिष्ठ पुरुष हैं।

रोमियों 16:1 पुरुष रूप "डायकोनोस" का उपयोग करता है, न कि महिला रूप: "डाइकोनोसिस"। कुछ मसीही इस शब्द का अनुवाद "डीकन"(का कार्यालय) करना चाहते हैं। लेकिन कहीं भी बाइबल किसी भी कलीसिया के कार्यालय में एक महिला की बात नहीं करती है। महिलाओं को कलीसिया में "प्राचीनों" के रूप में नियुक्त नहीं किया गया था और "डीकन" के रूप में भी नहीं।

1 तीमुथियुस 3:11 में, "इन महिलाओं की तरह" (यूनानी: गुनाइकस होसायटोस) शब्द डीकन के कार्यालय का उल्लेख नहीं कर सकता है, जिसे "डीकन" शब्द की आवश्यकता होती है (जापानी, टैस डी डायकोनस)। यह शब्द भी "डीकन की पत्नियों" के समान नहीं है, जिसे भी एक और शब्द की आवश्यकता होगी जो कि यूनानी (यूनानी: गुनाइकस ऑटोन / ऐकोन्टेस) में है। इसलिए, हमें यह निष्कर्ष निकालना चाहिए कि 1तीमुथियुस अध्याय 3 में उल्लेखित महिलाएं संभवतः महिलाओं का एक अलग समूह हैं जो कार्य करती हैं, न कि सेवकाई, बल्कि इफिसुस के कलीसिया में एक विशेष सेवा के रूप में, 1 तीमुथियुस 5:3-16 स्पष्ट रूप से बताते हैं। ।

(4) मसीही कलीसिया में महिलाओं से संबंधित निष्कर्ष।

हालाँकि गलातियों 3:28 सिखाता है कि यीशु मसीह के माध्यम से पुरुष और महिला दोनों समान रूप से "परमेश्वर की संतानें" हैं, उत्पत्ति अध्याय 1 से 3, 1 कुरिन्थियों 11 और 14, इफिसियों 5, कुलुस्सियों 3, 1 तीमुथियुस 2, 3 और 5, तीतुस 2 और 1 पतरस 3 सिखाता है कि सृष्टि में पुरुषों और महिलाओं के लिए परमेश्वर की योजना और नियम (बाइबल की शुरुआत से) रचना में (बाइबल के अंत तक) निश्चित रूप से अलग हैं। यद्यपि पुरुष और महिलाएं परमेश्वर की नजर में समान रूप से कीमती हैं, परमेश्वर ने पुरुषों और महिलाओं को विवाह संबंधों के साथ-साथ कलीसिया संबंधों में भी अलग-अलग कार्य सौंपे हैं।

मसीहियों को दो कार्यों से बचना चाहिए:

- जब बाइबल में ऐसा करने की कोई आज्ञा नहीं है, तो उन्हें कलीसिया कार्यालय में महिलाओं को विधिवत अगुवा बनाने से बचना चाहिए!
- और उन्हें बहुत महत्वपूर्ण और मूल्यवान सेवाओं की अनदेखी करने से बचना चाहिए जो कलीसिया को प्रस्तुत करने में सक्षम, धर्मनिष्ठ और सतर्क महिलाएं हैं!

16:5

***खोज 2.* रोम में मसीही कलीसिया एक साथ कैसे मिले।**

रोमियों के अध्याय 16 के सभी साक्ष्य "घरेलु कलीसिया" ("घरेलु सदस्यता") की दिशा में हैं। रोम में मसीही कलीसिया कई घरेलु कलीसियाओं में एक साथ मिले। रोमियों 16:5 के अनुसार, प्रिस्का और अक्विला के घर में एक कलीसिया थी (1 कुरिन्थियों 16:19; कुलुस्सियों 4:15; फिलेमोन 2)। यह घरेलु कलीसिया (ग्रीक: ekklésia) अपने स्वयं के घर के लोगों तक सीमित नहीं हो सकता है (प्रेरितों 10: 2; 11:14; 16: 15,31; 18: 8; 1कुरिन्थियों 1:16; 1 तीमुथियुस 3: 4; ; 5:13; 2 तीमुथियुस 1:16), लेकिन कई अलग-अलग परिवारों या घरों में शामिल होना चाहिए जो कलीसिया की गतिविधियों के लिए एक साथ मिले थे। रोम में अन्य घरेलु कलीसियाएँ भी थी: "नमस्ते ... उनके साथ भाइयो" (रोमियों 16:14)। "उनके साथ के सब पवित्र लोगों को नमस्कार" (रोमियों 16:15)। यह घरेलु कलीसिया नाम से उल्लेखित लोगों से जुड़ा था। इसलिए रोम के कलीसिया में कई घरेलु कलीसिया शामिल होंगी।

कदम 3. प्रश्न। **व्याख्या**

ध्यान दें। आप इस समूह से इस अनुच्छेद के आधर पर कौन सा प्रश्न पूछ सकते हैं?

आइये रोमियों 16:1-27 में पायी जाने वाली सच्चाइयों को समझने का प्रयास करें और उन बातों के बारे में प्रश्न पूछें जो हम अभी तक नहीं समझते।

लिखें: अपने प्रश्नों को जितना सम्भव हो स्पष्ट रूप दें। फिर उसे अपनी नोटबुक में लिखें।

साझा करें: (समूह के सभी लोग जब दो मिनट सोच विचार करके लिख चुके हों तो, होनें दे कि पहले हर सदस्य अपना प्रश्न साझा करें।)

चर्चा करें। (उसके पश्चात अपने समूह में एक साथ मिलकर कुछ प्रश्नों को चुनकर उन पर चर्चा करें।)

(नीचे विद्यार्थियों द्वारा पूछे जाने वाले प्रश्नों पर चर्चा करने पर प्राप्त विचारों के नोट्स के उदाहरण दिये गये हैं।)

16:7

प्रश्न 1. **अन्द्रुनीकुस और यूनियास प्रेरित थे या नहीं?**

ध्यान दें।

(1) वे साथी देशवासी थे।

अन्द्रुनीकुस और यूनियास पौलुस के रिश्तेदार (लूका 1:36; यूहन्ना 18:26) हो सकते थे, लेकिन इसके बजाय वह उसके साथी देशवासी थे (रोमियों 9:3; 16:7, 11, 21)। यह सोचने का कोई कारण नहीं है कि यूनियास नाम के अंत को एक महिला को निरूपित करना चाहिए, क्योंकि पत्रुबास और हिर्मास को "भाई" (रोमियों 16:14) कहा जाता है और यह भी भविष्यवक्ता एलिय्याह और यिर्मयाह (यूनानी: एलियास और जेरेमीस) पुरुष थे (मत्ती 16:14)। अन्द्रुनीकुस और यूनियास एक अन्य कारावास में पौलुस के साथी-कैदी भी थे। यूलिया हालांकि एक महिला थी (जूलियस मर्दाना है) (रोमियों 16:15)।

(2) वे प्रेरितों के बीच उत्कृष्ट थे।

उन्हें "प्रेरितों के बीच उत्कृष्ट" कहा जाता है (ग्रीक: एपिसोड) (रोमियों 16:7) (या मत्ती 27:16 में "कुख्यात")। शब्द "प्रेरित" (ग्रीक: अपोस्टोलोस) का अर्थ है "एक मिशन पर भेजा हुआ व्यक्ति (कार्य) (ग्रीक: अपॉस्टलो)" और मसीह के प्रेरितों को संदर्भित करता है (मरकुस 3:14-15; 1कुरिन्थियों 9:1) या कलीसियाओं के प्रेरितों को (प्रेरितों 14:14; फिलिप्पियों 2:25)।

हो सकता है कि वे 72 के समूह से संबंधित थे जो बाहर भेजे गए थे (ग्रीक: एपोस्टेलो) (एनोरिस्ट सक्रिय) (लूका 10:1) या कलीसियाओं के प्रेरितों के समूह के रूप में बरनबास, इपफ्रुदीतुस, अपुल्लोस, सिलवानुस एन तीमुथियुस। उन सभी ने सुसमाचार का प्रचार किया और उनको कलीसियाओं द्वारा भेजे गए लोगों के रूप में वर्णित किया जा सकता है। आज ऐसे लोगों को "कलीसिया के स्थापक" या "कलीसिया के निर्माणकर्ता" कहा जाता है।

16:10

प्रश्न 2. **परमेश्वर द्वारा परीक्षण और स्वीकृत होने का क्या मतलब है?**

ध्यान दें।

(1) कठिनाइयों के क्षेत्र में स्वीकृत।

एक मसीही को जीवन में आने वाली कठिनाइयों के क्षेत्र में परीक्षण और स्वीकृत होने की आवश्यकता है। रोमियों 16:10

में, अपुल्लोस को "मसीह में परिक्षण किया हुआ और स्वीकृत" के रूप में वर्णित किया गया है। एक मसीही को कब परखा और स्वीकृत किया जाता है? परमेश्वर विशेष रूप से मसीहियों का परीक्षण करने और उनके मसीही चरित्र को विकसित करने के लिए कठिनाइयों, परीक्षणों, प्रलोभनों और कष्टों का उपयोग करता है (तुलना करें रोमियों 5:3-4; याकूब 1:2-4)। जब इस तरह के "विश्वास के परीक्षण" के बीच एक मसीही (यूनानी: डोकीमियन टेस पिस्टोस) (याकूब 1:3) मसीह और मसीही विश्वास के प्रति वफादार रहता है, तो वह परमेश्वर द्वारा पूरी तरह से जांचा जाता है, परीक्षा उत्तीर्ण की है और परमेश्वर द्वारा स्वीकृत होता है। (यूनानी: डोकिमोस)। इस तरह के एक मसीही को यह जानकर संतोष हो सकता है कि परमेश्वर उससे प्रसन्न हैं और उसकी प्रशंसा करते हैं। एक मसीही को अपने जीवन की सभी कठिनाइयों के बीच परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य रहना चाहिए। तभी उसे परमेश्वर की स्वीकृति प्राप्त होती है!

(2) व्यवहार के क्षेत्र में स्वीकृत।

मसीही सभाओं में व्यवहार के क्षेत्र में एक मसीही का परमेश्वर द्वारा परीक्षण और स्वीकृत करने की आवश्यकता होती है। 1कुरिन्थियों 11:19-22 में, पौलुस कहता है, "इसमें कोई संदेह नहीं है कि आपके बीच यह दर्शाने के लिए मतभेद हैं कि आप में से कौन सा परमेश्वर को स्वीकार्य है। जब आप एक साथ आते हैं, तो क्या यह प्रभु का भोज नहीं है?" प्रभु का भोज प्रेम भोजन (ग्रीक: अगापे) के साथ मिलकर मनाया जाता था, यानी एक ऐसा भोजन जिसमें कलीसिया के मसीही एक साथ खाना खाते थे। कुछ मसीही स्वार्थी थे, अपना स्वयं का भोजन लाए और दूसरों की प्रतीक्षा किए बिना खा लिया और जो भोजन नहीं लाये थे उनके साथ बांटे बिना। दूसरों ने दुर्व्यवहार किया और यहां तक कि नशे में भी हो गए। परमेश्वर मसीही सभाओं में उनके व्यवहार और सामान्य जीवन में उनके व्यवहार के माध्यम से मसीहियों का परीक्षण करता है। एक मसीही को सभी परिस्थितियों में एक मसीही के रूप में व्यवहार करना चाहिए। तभी उसे परमेश्वर की स्वीकृति प्राप्त होती है!

(3) आत्मिक प्रशिक्षण और अनुशासन के क्षेत्र में स्वीकृत।

एक मसीही को आत्मिक प्रशिक्षण और अनुशासन के क्षेत्र में परमेश्वर द्वारा परीक्षण किये जाने और स्वीकृत होने की आवश्यकता है। 1कुरिन्थियों 9:24-27 में, पौलुस खेलों से चित्रों का उपयोग करके मसीहियों को प्रेरित करता है कि वे खुद को कड़े प्रशिक्षण के तहत रखें, लक्ष्यहीन रूप से न चलें और मुक्केबाजी में हवा में हाथ न मारें। वे कहते हैं, "हर कोई जो खेल में प्रतिस्पर्धा करता है वह कड़े अभ्यास में जाता है" (ग्रीक: एग्रेक्टुओमाई, शाब्दिक: आंतरिक आत्म-नियंत्रण, विशेष रूप से यौन निरंतरता)।" "मैं अपने शरीर को हराता हूँ " (ग्रीक: उपोपिआज़ो, का शाब्दिक अर्थ:" खुद को आंखों के नीचे हराता हूं", खुद लगाए गए अनुशासन के लिए एक अभिव्यक्ति) और इसे अपना गुलाम बनाऊं (ग्रीक: डोलगोजो, शाब्दिक रूप से:" इसे हार मानने में मजबूर करना"), ताकि दूसरों को उपदेश दूँ, मैं स्वयं पुरस्कार के लिए अयोग्य नहीं रहूँगा (ग्रीक: एडोकिमोस) (1कुरिन्थियों 9:25,27)।" परमेश्वर द्वारा परीक्षित और स्वीकृत होना, परमेश्वर द्वारा अयोग्य होने के विपरीत है। परमेश्वर द्वारा अयोग्य न होने के लिए, प्रत्येक मसीही को स्वयं को कठोर आत्मिक प्रशिक्षण के तहत जाना चाहिए और एक स्पष्ट लक्ष्य की ओर चलना चाहिए। तभी उसे पुरस्कार मिलता है- परमेश्वर की स्वीकृति!

(4) बाइबल की व्याख्या करने के क्षेत्र में स्वीकृत।

एक मसीही को भी सही तरीके से बाइबल की व्याख्या करने के क्षेत्र में परमेश्वर द्वारा परिक्षित और स्वीकृत होने की आवश्यकता है। 2तीमुथियुस 2:15 में, पौलुस का तीमुथियुस से कहना है, "अपने आप को परमेश्वर के सामने प्रस्तुत करने के लिए अपने आप से सबसे अच्छा करो (स्वीकृत: यूरोपीय (डोकीमोस), एक काम करने वाले को शर्मिंदा होने की आवश्यकता नहीं है (ग्रीक: एपिस्कून्तोस) और जो सही ढंग से सत्य के वचन का संचालन करता है (ग्रीक: ओर्थोटोमेओ, शाब्दिक: सत्य के शब्द

को सीधे काटना)"। बाइबल पढ़ाने वाले व्यक्ति को सही ढंग से बाइबल की व्याख्या करनी चाहिए (तीतुस 1:9)! वह परमेश्वर के वचन को विकृत नहीं कर सकता (2कुरिन्थियों 4:2)। इसलिए कलीसियाओं के अगुवों और बाइबल के शिक्षकों को बाइबल के नियम[21] में अच्छी तरह से प्रशिक्षित होना चाहिए (2कुरिन्थियों 4:2)। केवल जब कोई मसीही बाइबल की सही व्याख्या करता है, तो क्या वह परमेश्वर की स्वीकृति प्राप्त करता है!

(5) मसीही सेवकाई के क्षेत्र में स्वीकृत।

एक मसीही को अपनी सेवकाई के क्षेत्र में परमेश्वर द्वारा परीक्षित और स्वीकृत होने की आवश्यकता होती है। 2कुरिन्थियों 10:12-18 में, पौलुस कहता है, "हम हिम्मत नहीं करते... खुद की तुलना कुछ ऐसे लोगों से करें जो खुद की तारीफ करते हैं।... हम अपने घमंड को उस क्षेत्र में सीमित कर देंगे जिसे परमेश्वर ने हमें सौंपा है।... हम दूसरों द्वारा किए गए काम का घमंड करके अपनी सीमा से बाहर नहीं जाते हैं।... यह वह नहीं है जो स्वयं की सराहना करता है जो स्वीकृत है (ग्रीक: डोकिमोस), लेकिन वह है जिसकी प्रभु सराहना करता है।" पौलुस ने पहली बार कुरिन्थियों में सुसमाचार का प्रचार किया था और कुरिन्थियों में मसीही कलीसिया की स्थापना की थी।

बाद में, कुछ झूठे शिक्षक और यहाँ तक कि झूठे तथाकथित प्रेरितों ने भी आकर मसीहियों को अपने से दूर पौलुस को प्रभावित करने की कोशिश की। उन्होंने कुरिन्थियों की कलीसिया के बारे में दावा किया जैसे कि यह उनकी सेवकाई थी और पौलुस की तुलना में कुरिन्थियों के मसीहियों के लिए स्वयं की प्रशंसा करना महत्वपूर्ण था। पौलुस ने बस उत्तर दिया कि परमेश्वर उन झूठे प्रेरितों की सेवकाई का परीक्षण करेंगे और फलस्वरूप उन्हें स्वीकृति नहीं मिलेगी। भले ही ये झूठे प्रेरित खुद की तारीफ करते हों, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि परमेश्वर उनकी तारीफ करता है! यह "वह नहीं है जो स्वयं की सराहना करता है जो स्वीकृत है (ग्रीक: डोकिमोस), लेकिन वह है जिसकी परमेश्वर सराहना करता है!" मसीही अगुवों को एहसास होना चाहिए कि परमेश्वर निश्चित रूप से उनकी सेवकाई का परीक्षण करेंगे और या तो उन्हें अयोग्य ठहराएंगे या उनकी स्वीकृति देंगे। मसीही अगुवों को अपनी सेवकाई को अपने विचारों के अनुसार नहीं, बल्कि संपूर्ण बाइबल के अनुसार करना चाहिए, स्वतंत्र रूप से नहीं बल्कि परमेश्वर की पूर्ण निर्भरता में करना चाहिए। तभी उन्हें परमेश्वर की स्वीकृति प्राप्त होती है!

16:16

प्रश्न 3. मसीहियों के पवित्र चुम्बन की व्याख्या कैसे करनी चाहिए?

ध्यान दें। रोमियों 16:16 कहता हैं, "एक दूसरे का अभिवादन एक पवित्र चुम्बन के साथ करो": (ग्रीक: फिल्माति हैगीओ)। नए नियम से पता चलता है कि मसीहियों में एक दूसरे के एक चुंबन के साथ स्वागत करने की प्रथा थी।

(1) मसीही चुंबन स्नेह की एक उपयुक्त अभिव्यक्ति थी।

लूका 7:36-50 (45) के अनुसार, जब शमौन फरीसी ने रात का भोजन करने के लिए यीशु को आमंत्रित किया, उसने यीशु को चुंबन नहीं दिया, जो कि उन दिनों में रिवाज था। लेकिन जहां वे खा रहे थे पापी स्त्री आयी और यीशु के पैर का चुंबन नहीं रोका! यह पद्यांश दर्शाता है कि स्नेह को व्यक्त किया जाना चाहिए, उदाहरण के लिए, स्नेह की कुछ निशानी द्वारा। यीशु के

---

[21] निम्नलिखित शिक्षाओं के व्याख्यात्मक नियम :

- बाइबिल की शिक्षा (नियमावली 3, अद्ध्याय 29)
- प्रखाशित्वक्य की पुस्तक (नियमावली 1, अद्ध्याय 10)
- दृष्टान्त(नियमावली 9, परिशिष्ट)

समय के दौरान, चुंबन स्नेह की निशानी थी। हमारे दिन में, दुनिया के विभिन्न देशों में मसीहियों को यह तय करना चाहिए कि वे अपनी संस्कृति के भीतर अपने स्नेह को कैसे उपयुक्त तरीके से व्यक्त कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, कुछ संस्कृतियों में, मसीही पुरुष एक दूसरे को गले मिलते हैं। अन्य संस्कृतियों में, पुरुष और महिला एक दूसरे को छू नहीं सकते हैं या अकेले होने पर एक दूसरे से बात नहीं कर सकते हैं।.

(2) मसीही चुंबन स्नेह की एक ईमानदार अभिव्यक्ति है।

लूका 22:47-48 के अनुसार यहूदा ने एक चुंबन के द्वारा उसके दुश्मनों के लिए यीशु के साथ विश्वासघात। यहूदा का चुंबन निष्ठाहीन और विश्वासघात का एक चुंबन था। ये पद्यांश बताता है की चुंबन या मसीही स्नेह की कोई और अभिव्यक्ति वास्तविक और ईमानदार होनी चाहिए।

(3) मसीही चुंबन स्नेह का एक पवित्र अभिव्यक्ति है।

रोमियों 16:16 और 2कुरिन्थियों 13:12 के मुताबिक, प्रेरित पौलुस से एक दूसरे का एक पवित्र चुम्बन के साथ स्वागत करने के लिए आग्रह किया। "पवित्र" शब्द का अर्थ बुराई से अलग और परमेश्वर के लिए आरक्षित है। इसलिए, एक पवित्र चुम्बन का मतलब हमेशा तीन दलों का शामिल होना है: - दो लोग जो एक दूसरे को चूमते हैं और परमेश्वर जो देखता है और सब कुछ जानता है कि किस खातिर चुंबन दिया जाता है! एक तरफ चुंबन एक गलत इच्छा या मकसद से नहीं आ सकते हैं। दूसरी ओर चुंबन भावना रहित, और उदासीन और अर्थ के बिना नहीं हो सकता। मसीही चुंबन का अर्थ होना आवश्यक है: परमेश्वर के प्रेम और प्रतिबद्धता की अभिव्यक्ति।

(4) मसीही चुंबन स्नेह की एक आम अभिव्यक्ति थी।

1थिस्सलुनिकियों 5:26 के अनुसार, पवित्र चुम्बन मसीही परिवार के सभी सदस्यों के लिए है। हो सकता है कि मसीही उन सदस्यों के प्रति स्नेह प्रदर्शित न करें, जिन्हें वे किसी कारण से पसंद नहीं करते हैं! पवित्र चुम्बन पक्षपात के बिना हर मसीही को दी जानी चाहिए। यह पद्यांश बताता है कि चुंबन मसीही भाइयों और बहनों के बीच सामंजस्य और शांति बनाए रखता है।

(5) मसीही चुंबन स्नेह की एक प्यारी अभिव्यक्ति थी।

1पतरस 5:14 के अनुसार, मसीहियों को प्यार के एक चुंबन के साथ एक-दूसरे का अभिवादन करना चाहिए। मसीही चुंबन एक दूसरे के लिए प्रेम की प्रतिबद्धता का एक संकेत के रूप में है जैसा मसीह ने हमसे प्रेम किया (यूहन्ना 13:34-35) और जैसा 1 कुरिन्थियों 13 प्यार करने के लिए सिखाता है।

(6) मसीही चुंबन के इतिहास।

इस बात के प्रमाण है की पवित्र चुम्बन पश्चिमी कलीसिया में 13 वीं सदी तक आम मसीही द्वारा उपयोग में पारित किया जाता था। आज भी यह कॉप्टिक मसीही कलीसिया में जारी है! कुछ संस्कृतियों में अन्य संस्कृतियों की तुलना में विभिन्न लिंगों के बीच संपर्क अधिक सख्ती से नियमित है। मसीही चुंबन का सही प्रयोग यह होगा की दुनिया के हर देश में मसीहियों को यह तय करना चाहिए कि क्या एक दूसरे से अपने मसीही स्नेह व्यक्त करने के लिए एक उपयुक्त तरीका क्या होगा।

16:17-18

***प्रश्न 4*. मसीहियों को झूठे शिक्षकों से कैसे संबंधित होना चाहिए?**

ध्यान दें। रोमियों 16:17-18 कहता है, "मैं तुम से विनती करता हूँ, कि जो लोग उस शिक्षा के विपरीत, जो तुम ने पायी है, फूट डालने और ठोकर खिलाने का कारण होते हैं, उन्हें ताड़ लिया करो और उनसे दूर रहो। क्योकि ऐसे लोग हमारे प्रभु मसीह की नहीं, लेकिन अपने पेट की सेवा करते हैं; और चिकनी चुपड़ी बातों से सीधे-सादे मन लोगों को बहका देते हैं।" उन लोगों के लिए देखें जो विभाजन का कारण बनते हैं (ग्रीक: डाइकोस्टैसिया) और आपके रास्ते में बाधाएं डालते हैं जो आपके द्वारा सीखे गए शिक्षण के विपरीत हैं। इनसे दूर रहें। ऐसे लोग हमारे प्रभु मसीह की सेवा नहीं कर रहे हैं, लेकिन उनकी अपनी भूख की (शाब्दिक अर्थ है: स्वयं के पेट का दास होना)। चिकनी-चुपड़ी बातों और चापलूसी के द्वारा वे भोले (निर्दोष, भद्दे) (ग्रीक: अकाकोस) लोगों के दिमाग को धोखा देते हैं।"

(1) झूठे शिक्षक और उनकी विधियाँ।

यह कहीं भी नहीं निहित है कि ये लोग रोम में कलीसिया के सदस्य थे, क्योंकि पौलुस रोम में मसीहियों की आज्ञाकारिता की सराहना करता है (रोमियों 16:19)। इसके बजाय, वे शायद बाहरी थे, यात्रा करने वाले झूठे शिक्षक और प्रचारक। कुछ लोग *स्वतंत्र विचारक (उदार)* हो सकते हैं, जो परमेश्वर के नियम को पूरी तरह से खारीज करते हैं और सिखाते हैं कि लोग जितना चाहें उतना पाप कर सकते हैं (रोमियों 6:1)। अन्य लोग *व्यवस्थायी* हो सकते हैं जो सिखाते हैं कि लोगों को खतना करना कराना चाहिए और बचाया जाने के लिए मूसा के औपचारिक व्यवस्था को बनाए रखना चाहिए (15:1)। वे अपने धर्म के लिए प्रचार करते हैं, ऐसा करने के लिए घूस देते हैं और अपने धार्मिक नेताओं की स्वीकृति प्राप्त करते हैं। वे लोगों को अपनी झूठी शिक्षाओं पर विश्वास कराने में अनुभव रखते हैं।[22] बाइबल की शिक्षाओं को यीशु मसीह के विरोध में मोड़ना उनकी विशेषता है। वे "सिखाने के उस रूप के प्रति आज्ञाकारी नहीं हैं जो मसीह ने उन्हें सौंपा था" (रोमियों 6:17)।

(2) मसीहियों को झूठे शिक्षकों और प्रचारकों के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए।

पौलुस यह नहीं कहते हैं कि मसीहियों को इन झूठे शिक्षकों का *विरोध* करना चाहिए, क्योंकि वे मसीही कलीसिया के सामान्य सदस्यों के लिए बहुत मजबूत थे। इसके बजाय वह कहता है कि हर समय (ग्रीक: स्कोपो) इन पर *नज़र रखो*, यह है कि, पहचाने की ये पुरुषों और महिलाओं कौन है ताकि इनसे बचा जा सके! प्रेरित पौलुस मसीहियों को इन झूठे शिक्षकों (भविष्यद्वक्ताओं और प्रेरितों) से "दूर रखने" की आज्ञा देता है (रोमियों 16:17)!

प्रेरित यूहन्ना ने भी मसीहियों को अपने घर में झूठे शिक्षकों को न ले जाने और उनका स्वागत न करने की आज्ञा दी, क्योंकि जो कोई भी ऐसे शिक्षक का घर में स्वागत करता है वह झूठे शिक्षक के दुष्ट कार्य में भाग लेता है"(2यूहन्ना 10-11)। अंत में, प्रेरित पौलुस उन लोगों के बारे में कहते हैं जो भी सुसमाचार को विकृत करके मसीही को भ्रम में डालते हैं, "भले ही स्वर्ग का एक स्वर्गदूत[23]" को दूसरे सुसमाचार का प्रचार करना चाहिए (बाइबल में प्रेरितों द्वारा प्रचारित सुसमाचार के अलावा), उसे सदा के लिए धिक्कार दिया जाए (आरोपित)(गलातियों 1:6-9)!

16:25-26

***प्रश्न 5.* रहस्य क्या था?**

ध्यान दें।

(1) छिपा हुआ रहस्य।

---

[22] जहोवा विटनेस, मोरमोंस तथा गैर मसीही पंथों के बारे में विचार करें

[23] उदाहरण के लिए इस्लाम में "जिब्राएल फरिश्ते" की क्या भूमिका है

"एक रहस्य" एक सच्चाई है जो अज्ञात होती है जब तक यह प्रकट नहीं की जाती।

रहस्य पहले एक व्यक्ति था जो अज्ञात रहेगा यदि परमेश्वर ने उसे प्रकट नहीं किया है। पूरे पुराने नियम की अवधि के दौरान यह एक रहस्य (एक रहस्य) था कि वास्तविक "इस्राएल" याकूब (उत्पत्ति 32:28) नहीं था और यहूदी राष्ट्र भी नहीं था (निर्गमन 4:22), लेकिन "प्रभु का दास", अर्थात्, यीशु मसीह। "तुम मेरे दास, इस्राएल हो, जिसमें मैं अपनी शोभा बढ़ाऊंगा" (यशायाह 49:3)! इस दास के माध्यम से "प्रभु अपने द्वारा रखे गए इस्राएल को वापस लाएगा" (बचे हुए), उसे (अन्यजातियों) राष्ट्रों के लिए एक प्रकाश बनाओ और पृथ्वी के सिरों तक परमेश्वर का उद्धार लाओ "(यशायाह 49:6)

उसके बाद रहस्य उसके लोगों में परमेश्वर है, "वह रहस्य जिसे युगों-युगों और पीढ़ियों से छिपा कर रखा गया है, लेकिन अब मसीहियों के लिए इसका खुलासा किया गया है: तुम में मसीह" (ग्रीक: एन) (बहुवचन, मसीही कलीसिया) (कुलुस्सियों 1:25-27)। स्वर्ग में अपने स्वर्गारोहण के बाद यीशु मसीह ने वादा किया था कि पवित्र आत्मा उनके शिष्यों (मसीहियों) "में" और उनके "साथ" रहेगा । पवित्र आत्मा स्वयं यीशु मसीह से कम नहीं है, जो अनाथों के रूप में शिष्यों को पीछे नहीं छोड़ते थे, लेकिन उनके पास आते थे (यूहन्ना 14:16-18; तुलना करें रोमियों 8:9-10; 2कुरिन्थियों 3:17)!

रहस्य आखिरकार वही लोग हैं। पूरे पुराने नियम की अवधि के दौरान यह एक रहस्य था कि सुसमाचार के माध्यम से गैर-यहूदी विश्वासी (अन्यजातियाँ) इस्राएल के साथ-साथ एक शरीर (कलीसिया) के सदस्यों और मसीह यीशु के वादे में एक साथ साझा करने के लिए वारिस होंगे: (इफिसियों 3:2-6; तुलना करें 2 कुरिन्थियों 1:20)! परमेश्वर के पुराने नियम के लोग "इस्राएल" (इस्राएल के भीतर विश्वासियों) को समाप्त या प्रतिस्थापित नहीं किया गया है, लेकिन जारी रखा गया है (छाया के अनुरूप वास्तविकताओं के उच्च तल पर) (कुलुस्सियों 2:17) और पृथ्वी पर सभी राष्ट्रों के सभी मसीहियों को शामिल करने के लिए विस्तारित किया गया!

गैर-यहूदी विश्वासी एक दिन बड़ी संख्या में परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करेंगे। यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के दिन से परमेश्वर का राज्य जोश के साथ आगे बढ़ रहा है और जोशीले पुरुष उत्सुकता से इसे अधिकार में ले रहे हैं (मत्ती 11:12)। मसीह के दूसरे आगमन (दुनिया के अंत) के पहले आगमन से लेकर परमेश्वर के राज्य (राजा) के सुसमाचार को पूरी दुनिया में सभी राष्ट्रों के लिए एक गवाही के रूप में प्रचार किया जाएगा (मत्ती 24:14)।

विश्वासी गैर-यहूदी, विश्वासी यहूदियों के सभी परमेश्वर के वादों (2 कुरिन्थियों 1:20) के एक साथ वारिस होंगे और वे यहूदी विश्वासियों के साथ एक समान शरीर (कलीसिया) के सदस्य होंगे। (इफिसियों 2:14-22; 3:2-6)! विश्वास करने वाले यहूदी अब केवल परमेश्वर के चुने हुए लोग (चुनाव) नहीं हैं (व्यवस्था 7:6-10), लेकिन सभी राष्ट्रों के यीशु मसीह में विश्वासियों ने मिलकर परमेश्वर के लोगों का निर्माण किया। प्रेरित पतरस इस प्रकार कहता है, "पर तुम एक चुना हुआ वंश, और राज-पदधारी याजकों का समाज, और पवित्र लोग, और (परमेश्वर की) निज प्रजा हो, इसलिये कि जिसने तुम्हें अंधकार में से अपनी अद्भुत ज्योति में बुलाया है, उसके गुण प्रगट करो। तुम पहले तो कुछ भी नहीं थे पर अब परमेश्वर की प्रजा हो; तुम पर दया नहीं हुई थी पर अब तुम पर दया हुई है।"(1पतरस 2:9-10; तुलना करें। रोमियों 10:12 और गलातियों 3:28)।

(2) रहस्य का खुलासा किया गया है।

हालाँकि इस रहस्य का पहले भी पुराने नियम के "भविष्यद्वाणी की पुस्तकों" में वादा किया गया था (रोमियों 1:2; 16:26), यह "लंबे समय तक अतीत में छिपा रहा" (रोमियों 16:25)। हालाँकि परमेश्वर की उद्धार कि अनन्त योजना में दुनिया के हर

देश के लोग बड़ी संख्या में शामिल थे (उत्पत्ति 12:3; 22:18; यशायाह 42:6; 49:6), यह वादा यीशु मसीह के पहले आगमन पर पूरा होने लगा। । यीशु मसीह को सूली पर चढ़ाए जाने और मृतकों के पुनरुत्थान के बाद ही पापों का प्रायश्चित किया गया था, नए नियम का दौर शुरू हुआ। धरती पर मौजूद हर जनजाति, भाषा, लोग और राष्ट्र के लोग अब यीशु मसीह पर विश्वास कर रहे हैं, उसकी आज्ञा मान रहे हैं (रोमियों 16:26) और परमेश्वर के राज्य में जा रहे हैं (मत्ती 8:12)।

रोमियों को पत्र में एक कलीसिया को संबोधित किया गया था जिसमें विश्वासी यहूदी और विश्वासी अन्यजाति दोनों को सम्मिलित किया गया था, जिन्होंने बाइबल के परमेश्वर की आराधना और सेवा की थी। इस तरह बाइबल का एकमात्र बुद्धिमान परमेश्वर यीशु मसीह के द्वारा हमेशा के लिए महिमावान हो जाता है (रोमियों 16:27)!

चरण 4. लागू करना। अनुप्रयोग

विचार करें। इन वचनों में कौन-से सत्य मसीहियों के लिए संभावित अनुप्रयोग हैं?

साझा करें और अभिलेखित करें। आइए हम एक-दूसरे के साथ विचार-मंथन करें और रोमियों 16:1-27 से संभावित अनुप्रयोगों की सूची अभिलेखित करें।

विचार करें। परमेश्वर किस संभावित अनुप्रयोग को चाहता है कि आप उसे एक व्यक्तिगत अनुप्रयोग में बदल दें?

अभिलेखित करें। इस व्यक्तिगत अनुप्रयोग को अपनी स्मरण-पुस्तक में लिख लें। अपने व्यक्तिगत अनुप्रयोग को साझा करने में स्वतंत्रता महसूस करें।

(स्मरण रखें कि प्रत्येक समूह के लोग अलग-अलग सत्य लागू करेंगे या एक ही सत्य के अलग-अलग अनुप्रयोग करेंगे। निम्नलिखित संभावित अनुप्रयोगों की एक सूची है।)

1. रोमियों 16: 1-27 से संभावित अनुप्रयोगों के उदाहरण।

16:1. अपनी मण्डली का प्रतिनिधित्व करने वाले व्यक्ति के साथ मिलकर अनुशंसा पत्र भेजें।

16:2. एक यात्री मसीही की कुछ भी मदद करिये जो आपसे हो सकती है।

16:3. स्वतंत्र और अलग होने के बजाय अन्य मसीहियों के साथ एक साथी कार्यकर्ता बनें।

16:5. अपने घर को घरेलु कलीसिया के लिए उपलब्ध कराएं।

16:7. उन मसीहियों को याद रखें जो जेल में हैं (इब्रानियों 13: 3) और उनके लिए प्रार्थना करें (प्रेरित 12: 5) ।

16:10. इस तथ्य का स्वागत करें कि परमेश्वर आपको स्वीकार करने के लिए कठिनाइयों के माध्यम से आपका परीक्षण करता है।

16:16. अपने मसीही स्नेह को दिखाने के तरीके खोजें जो आपकी संस्कृति में उपयुक्त हों।

16:17. उन लोगों पर नज़र रखें जो झूठे शिक्षक हैं और अपने घरों में उनका स्वागत ना करें।

16:19. बुराई क्या है, इसके बारे में भोले बने रहो। इसलिए बुरे टेलीविजन कार्यक्रम या फिल्में न देखें, बुरी किताबों और पत्रिकाओं को न पढ़ें और अपनी आंखों, कानों और दिमाग को हर उस चीज से दूर रखें जो आपकी मासूमियत को बुराई के साथ दूर ले जाएगी।

16:20. हालाँकि शैतान को हरा दिया गया है (मत्ती 12:28-29; यूहन्ना 12:31), फिर भी उसके पास बुराई करने की बहुत ताकत है

(तुलना करें 1 पतरस 5:8)। इसलिए लगातार उसका प्रतिरोध करता है (1 पतरस 5: 9; याकूब 4: 7)। मसीह के दूसरे आगमन

पर, शैतान को अंततः उखाड़ फेंका जाएगा और नरक में डाल दिया जाएगा (2 थिस्सलुनीकियों 2: 8; प्रकाशितवाक्य 20:10)।

2. रोमियों 16: 1-27 से व्यक्तिगत अनुप्रयोगों के उदाहरण।

मैं अपना घर मसीहियों को मिलने के लिए उपलब्ध कराना चाहता हूं।
मैं अपने अन्य भाइयों और बहनों से उचित स्नेह दिखाना सीखना चाहता हूं।

चरण 5. प्रार्थना। **प्रतिउत्तर**

आइए उस एक सत्य के लिए प्रार्थना करने हेतु बारियाँ लें, जो परमेश्वर ने हमें रोमियों 16:1-27 में सिखाया है। (इस बाइबल अध्ययन के दौरान आपने जो कुछ भी सीखा है, उसका प्रार्थना में प्रतिउत्तर दें। केवल एक या दो वाक्य में प्रार्थना करने का अभ्यास करें। स्मरण रखें कि प्रत्येक समूह के लोग अलग-अलग बातों के विषय में प्रार्थना करेंगे।)

5	**प्रार्थना** (8 मिनट)	***[मध्यस्थता]*** **दूसरों के लिये प्रार्थना**

दो या तीन समूहों में प्रार्थना करना जारी रखें। एक दूसरे के लिये और संसार भर के लोगों के लिये प्रार्थना करें। (रोमियों 15:30; कुलुस्सियों 4:12)।

6	**तैयारी** (2 मिनट)	***[निर्धारित कार्य]*** **अगले अध्याय के लिये**

(समूह अगुवा। समूह के सदस्यों को लिखित रूप में घर पर इसकी तैयारी करने को दें या उन्हें इसकी प्रतिलिपि लेने दें)।

1. समर्पण। चेले बनाने, कलीसिया बनाने और राज्य का प्रचार करने के लिए प्रतिबद्ध हों।
2. किसी अन्य व्यक्ति या लोगों के समूह के साथ मिलकर रोमियों 16:1-27 **प्रचार करें, शिक्षा दें या अध्ययन**।
3. परमेश्वर के राज्य के विषय पर प्रचार करने हेतु अपनी नोटबुक का अद्यतन करें। अपने शांत समय के नोट्स, अपने स्मरणीय नोट्स, अपने बाइबल के अध्ययन के नोट्स और इस तैयारी को शामिल करें।

बढ़ना ज़ारी है

1. शांत समय।

यीशु मसीह (शांत समय) के साथ व्यक्तिगत संगति का नियमित समय जारी रखें। पसंदीदा सत्य विधि का उपयोग करें (नियमावली 1, पूरक 1 देखें)। बाइबल पढ़ने के कार्यक्रम का उपयोग करने का एक अच्छा तरीका है (नियमावली 1 देखें, पूरक 2)। अपने शांत समय के नोट्स बनाना जारी रखें।

2. स्मरण करना।

अपने बाइबल पढ़ने और बाइबल अध्ययन को याद रखने के लिए अपनी खुद की नई बाइबल के वचनो का चयन करना जारी रखें। नियमित रूप से महत्वपूर्ण बाइबल वचनो को याद रखें (नियमावली 1 देखें, पूरक 5)। और हर दिन पिछली 5 याद

किये गए बाइबल वचन की समीक्षा करना जारी रखें।

3. बाइबल अध्ययन।

बाइबल अध्ययन करना जारी रखें (तुलना करें नियमावली 1, पूरक 4)। अपनी स्वयं की बाइबल पुस्तक का चयन करें और पुस्तक का अध्ययन करने के लिए बाइबल अध्ययन के पाँच चरणों का उपयोग करें। पुराने नियम में कुछ पुस्तकों का अध्ययन करने से पहले आपको नए नियम में सबसे महत्वपूर्ण पुस्तकों का अध्ययन करने की सलाह दी जाती है, क्योंकि पुराने नियम की व्याख्या नए नियम के प्रकाशन की रोशनी में की जानी चाहिए (तुलना करें लूका 24:25,25,44-45)।

4. प्रार्थना।

हर हफ्ते किसी न किसी व्यक्ति के लिए प्रार्थना करना जारी रखें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन संहिता 5:3) ।

5. मसीही संगति।

मण्डली में अन्य विश्वासियों के साथ मिलना जारी रखें (या तो एक घरेलु कलीसिया समूह या बड़ी कलीसिया की बैठक में)।

6. फल देने वाला।

बहुत फल और स्थायी फल (यूहन्ना 15:5,8,16) देना जारी रखें। यीशु मसीह के लिए गवाह (तुलना करें मत्ती 10:32; 1पतरस 3:15-16)। विभिन्न तरीकों से सुसमाचार फैलाएं। अपने आस-पास के लोगों को यीशु मसीह के करीब आने के लिए प्रभावित करने के लिए दृढ़ संकल्पित रहें। सभी देशों से शिष्य बनाओ (मत्ती 28: 18-20)।

7. शिष्यत्व।

यीशु मसीह का अनुसरण करना जारी रखें, उनसे सीखें और उनके शब्दों का पालन करें (तुलना करें मत्ती 7:24-27)।

नये समूह शुरू करें

जब भी आपने विश्वासियों के समूह का प्रशिक्षण पूरा किया है, तो दो काम करें:

1. अपने छात्रों को एक नया Dota समूह (घरेलु संगती / कलीसिया) शुरू करने के लिए प्रेरित करें

जिन्हें आपने प्रशिक्षित किया है उन विश्वासियों के इस समूह को चुनौती दें, नए विश्वासियों के अपने छोटे समूह को शुरू करने के लिए, जो आत्मिक रूप से बढ़ना चाहते हैं। उन्हें इस संपूर्ण पाठ्यक्रम का उपयोग करने दें या उन्हें प्रशिक्षित करने के लिए इस पाठ्यक्रम का एक हिस्सा बनाएं।

नियमित रूप से नए शिष्यत्व समूह के अगुवों को प्रशिक्षित और प्रोत्साहित करना जारी रखें।

2. खुद एक नया Dota समूह शुरू करें।

खुद का एक नया डोटा समूह बनाने के लिए प्रेरित, आमंत्रित और प्रार्थना के साथ कुछ लोगो का चयन करें । उन्हें प्रशिक्षित करने के लिए इस संपूर्ण पाठ्यक्रम या इस पाठ्यक्रम का एक हिस्सा बनाएं। डोटा पाठ्यक्रम में निम्नलिखित तीन भाग होते हैं:

जाओ और चेले बनाओ।	शिष्य के नियमावली 1 से 4 में 48 अध्याय।
जाओ और मसीह की कलीसिया बनाओ।	कलीसिया नियमावली 5 से 8 में 48 अध्याय।
जाओ और परमेश्वर के राज्य के बारे में सुसमाचार प्रचार करो।	राज्य नियमावली 9 से 12 में 48 अध्याय।